International Journal of sociology and Politicalscience
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 22-12-2024, Accepted: 21-01-2025, Published: 05-02-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 22-23

कला इतिहास में अनुसंधान–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भरत कुमार
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, महात्मा गांधी महाविद्यालय, गिड़ा, बालोतरा, राज्यस्थान, भारत

सारांश
मनुष्य की रचना जो जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है। कला का मनुष्य के मानसिक, बौद्धिक शारीरिक, चारित्रिक, आत्मिक व्यक्तित्व, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक तथा दार्शनिक विकास के मूल्यों को ध्यान में रखकर निर्माण किया जाता है। कला इतिहास में हम उन कलाकृतियों का अध्ययन करते है. जो हमें उस समय की संस्कृति के प्रचलन से अवगत कराती है तथा उसके पीछे के उद्देश्यों से हमे रूबरू कराती है। कला इतिहास में अनुसंधान किसी कलाकृति या कलाकृतियों में प्रयुक्त तत्त्वों सिद्धातों-सृजनात्मक पक्षों तथा उद्देश्यों को आधार लेकर की जाती है।
अनुसंधान की इस प्रक्रिया में हम समस्या का चयन निरूपण एवं उसकी परिभाषा, सम्बन्धित सूचना का सर्वेक्षण नवीन दत्तों का संग्रह, विश्लेषण तथा व्याख्या तथा किये गये कार्य का प्रतिवेदन आदि सभी पदों का प्रयागे करते हैं। किसी भी अनुसंधान में प्रदत्तों का सकं लन मलू व गौण स्त्रोतों से किया जाता है। किंतु मूल प्रदत्त अनुसंधान की सत्यता व प्रतिष्ठा के लिये महत्वपूर्ण हाते है। विभिन्न दृश्य कलाओं का उनकी समस्या के आधार पर संकलन व विश्लेषण कर एक परिसिमन में अध्ययन किया जाता है जो हमारे अनुसंधान का उद्देश्य है। अतः वर्तमान की समस्याओं को दूर करने हेतु अतीत कें अनुभवों से लाभ उठाना कला इतिहास के अनुसंधान की उपयोगिता को तर्क–संगति प्रदान करता है।

मुलशब्द: कला इतिहास, अनुसंधान, उद्देश्य, समस्या का चयन, परिकल्पना, प्रदत्त संकलन, विश्लेषण, प्रतिवेदन लेखन, प्राथमिक व द्वितियक प्रदत्त

मूल शोध– पत्र

कला शब्द 'कल्' धातु से बनवा है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– सुन्दर अर्थात् जी आनन्द उत्पन्न करती है। प्रत्येक कलाकृति युग, व्यक्तित्व और परिस्थिति को व्यक्त करती है। इसीलिये प्रयाजे नानुसार कला की अलग–अलग प्रकारों में व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। भारतीय साहित्य का अवलोकन करने पर अधिकतर कलाये 64 प्रकार की मानी गई है। इन सभी स्वरूपों में सत्यम् शिवम् सुन्दरम, कल्याण व भावाभिव्यक्ति का समावेश देखने को मिलता है।
भारतीय कला को धर्म से भी जोड़ा गया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में कहा गया है–

कलाना प्रवरं चित्र धर्म कामार्थ मोक्षदं।
मौगल्यं प्रथमम् हैतं गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।

अत कला उद्देश्यपूर्ण है, जिसमें मनुष्य के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, चारित्रिक, आत्मिक, व्यक्तित्व, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक तथा दार्शनिक विकास के मूल्यों को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया जाता है। जिस प्रकार कलाकृतियाँ किसी सभ्यता और संस्कृति की निधि होती है. उसी प्रकार इतिहास भी किसी संस्कृति और सभ्यता के विकास की कहानी होती है। कला इतिहास से हम उन कलाकृतियों का अध्ययन करते है. जो हमे उस समय की सस्कृति के प्रचलन से अवगत कराती है तथा उसके पीछे के उद्देश्यों से हमें रूबरू कराती है। इन्हीं उद्देश्यों को आधार लकेर वर्तमान परिदृश्य में कलाकृतियों वो महत्व का अध्ययन हम कला इतिहास में अनुसंधान के रूप में करते है। इस प्रक्रिया में हम समस्या का चयन, निरूपण एवं उसकी परिभाषा सम्बन्धित सूचना का सर्वेक्षण, नवीन दत्तों का संग्रह, विश्लेषण एवं व्याख्या तथा किये गये कार्य का प्रतिवदेन– आदि सभी पदों का प्रयोग करते हैं। कलात्मक प्रदत्तों के संकलन में हम चित्र, मूर्ति मिति–चित्र, पवित्र, ताड़–चित्र बर्तन–भाण्डे, अलंकरण, वस्त्र–आभूषण आदि विभिन्न कलाकृतियों को ले सकते है. जोहमारी विषय–वस्तु सेसम्बन्धित हो।
प्रत्येक अनुसंधान में पुस्तकालय अनुसंधान, क्षेत्रीय अनुसंधान तथा प्रयोगशाला अनुसंधान (विश्लेषण) के सोपान से गुजरा जाता है। कला के ऐतिहासिक अनुसंधान की निम्न विशेषतायें होती है–

1. यह अतीत की घटनाओं, विचारों तथा कार्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
2. यह भी अन्य के समान परिकल्पनाओं, प्रदत्तों, साक्ष्यों तथा प्रतिवेदनों का सहारा लेता है।
3. इसके लिये प्रमाण पुस्तकालयों. संग्रहलायो, प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, विशिष्ट व्यक्तियों. पुरातत्त्वीय उत्खनन कार्यों तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त होते है।
4. इनका मुख्य उद्देश्य अतीत के अध्ययन के आधार पर वर्तमान को समझना, वतर्मान की समस्याओं का समाधान तलाशना, नये आयाम स्थापित करना. अतीत की घटनाओं का सही स्वरूप प्रस्तुत करना तथा भविष्य के लिए पूर्व कथन स्थापित करना है।
5. किसी भी कलात्मक अनुसंधान में कलाकृति का अध्ययन, उसमें प्रयक्तु कला तत्वों (रखा, रगं रूप, तान. पाते अंतराल) घडांगो (रूपभदे, प्रमाण, भार लावण्य योजना, सादृश्य, वर्णिका भंग) संवोजन के सिद्धातों (सहयोग, सामाजस्य, सतंलुन प्रवाह, प्रभाविता प्रमाण तथा परिप्रेक्षय) उसमें निहित सूजनात्मक पक्षों व उद्देश्यों को आधार पर की जाती है।

कला इतिहास में अनुसंधान के सोपान–

कला इतिहास में अनुसंधान को सम्पन्न करने के लिए निम्न सोपानों की
आवश्यकता होती है

1. समस्या का सवन
2. परिकल्पनाओं का निर्माण
3. प्रदत्त संकलन

4. प्रदत्त की आलोचना
5. इतिहास या प्रतिवेदन लेखन

कला इतिहास के अनुसंधान में शोधकर्ता समस्या का चयन, पूर्वानुभव ज्ञान योग्यता व अध्ययन के आधार पर किसी व्यक्ति, सरथा, समाज या राष्ट्र के कलात्मक इतिहास के किसी पक्ष या घटना सम्बन्धित किसी पहलू पर कर सकता है। समस्या का परिसीमन भी शाध्े ाकर्ता को अपने भटकाव से बचाता है. साथ ही समस्या की उपयोगिता तथा उत्तरी सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री को ध्यान में रखकर ही समस्या का चयन करना चाहिए।

समस्या के निर्धारण के पश्चात् उसकी परिकल्पना का निर्माण किया जाता है. जिसमें अतीत की घटनाओं व तथ्यों के सम्बन्ध में नई जानकारियों प्रदान की जाती है, जो वर्तमान के लिये उपयोगी, निष्पक्ष व स्पष्ट हो। हर एक अनुसंधान को सिद्ध करने के लिये प्रमाण की आवश्यकता होती है, जिसे हम प्रदत्त (डाटा) संकलन द्वारा पूर्ण करते है। प्रदत्तोबातं दो प्रकार के हो सकते है– मूल स्त्रोत तथा गौण या द्वितीयक स्त्रोत। मूल स्त्रोत अध्ययन के लिये ठोस, प्रमाणिक तथा सशक्त आधार प्रस्तुत करते है। इसके बाद प्रदत्तों का आलोच नात्मक विश्लेषण किया जाता है। मूल्यांकन की वह प्रक्रिया जिसका उपयोग काम में आने वाले तथा विश्वसनीय दत्तों को प्राप्त करने हेतु किया जाता है, जिन्हें ऐतिहासिक प्रमाण कहते है, ऐतिहासिक आलाचे ना के नाम से जानी जाती है।

प्रदत्तों की आलोचना पूर्वागृह, धार्मिक विचार, राजनैतिक पक्षपात, स्वयं का स्वार्थ, व्यक्तिगत अभिमान या महत्वाकांक्षा, साहित्यिक आडम्बर, विषय–वस्तु के प्रति अज्ञानता असत्य कहने की कमजोरी आदि से बचना चाहिए। ऐतिहासिक अनसुंधान कार्य के प्रतिवदे न लेखन में प्रलेखन अन्य अनुसंधान के समान होता है। इसमें फटु नोट्स तथा विस्तृति सदर्भ ग्रंथावली प्रस्तुत करने में विभिन्न सोपान (लेखक का उपनाम, लखेक का नाम, ग्रंथ का नाम पब्लिक वर्ष) हाते हैं। कला इतिहास अनुसंधानकर्ता का यह कर्तव्य हे कि वह पुराने दत्तों की नवीन रूप से व्याख्या करें या नवीन ऐतिहासिक दों कोएकत्रित करके यथासम्भव सर्वातेम ढगं से उनकी व्याख्या करें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान की प्रासंगिकता तथा उपयोगिता को स्पष्ट करें। साथ ही अनुसंधानकर्ता को अपनी लेखन शैली में सरलता श्रेष्ठा शक्ति स्पष्टता तथा बस्तुनिष्ठता जैसे गुणों का भी समावेश करना चाहिये। वर्तमान की समस्याओं को दूर करने हेतु अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना, कला इतिहास के अनुसधान की उपयोगिता को तर्क–संगति प्रदान करता है। इस प्रकार कला इतिहास के अनुसंधान से छात्रों के कलात्मक ज्ञान को प्रकाश में लाने के लिये निरीक्षण, स्वतंत्र माय–प्रकाशन, क्रियात्मक रचनात्मक, अनुकरण, वर्णनात्मक, प्रदर्शनात्मक, प्रतीकात्मक, अलंकरण, स्मृति और कल्पना आदि प्रवृतियों का विकास किया जाता है।

अतः काला एक क्रिण है. जो व्यावहारिक या उपयोगी मूल्यों के अतिरिक्त कलाकार को और उन व्यक्तियों को जोउसके कार्य में दर्शक श्रोता अथवा सहयोगी के रूप में अंशग्रहण करते हैं. संतुष्टि प्रदान करती है। यही सौन्दर्यपूर्ण वा ललित तत्व है. जो कला को संस्कृति के दसूरे पक्षों से पृथक करता है।

संदर्भ ग्रंथः

1. शर्मा, एस. के. तथा अवाल, आर.ए. – रूपप्रद कला के मूलाधार इंटरनेशनल पब्लिशिंग 2000 हाउस, मेरठ
2. कासलीवाल, मीनाक्षी – ललितकला के आधारभतू सिद्धात, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2007
3. सांखलकर, रवि – आधुनिक चित्रकला का इतिहास जयपुर 2008 न्दी ग्रंथ अकादमी
4. सिंह, डॉ. रामपाल तथा शर्मा, डॉ.ओ.पी. – शैक्षिक अनुसंधान एवं संख्यिकी, विनादे पुस्तक मन्दिर आगरा 2008
5. सिडाना, डॉ. अशाके कुमार – कलाशिक्षा एवं कार्यानुभव शिक्षा–शिक्षण, शिक्षा प्रकाशन, जयपरु 2007
6. शर्मा, आर. के. तथा समां नरेन्द्र कुमार –कला शिक्षा शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, 2008
7. पाण्डे, पूर्णिमा – कला के मूलतत्व और सिद्धान्त, जागृति प्रकाशन, अलीगढ़ 2002
8. हवेल, ई.वी – हैण्डबुक ऑफ इंडियन आर्ट
9. श्रीवास्तव, ए.एल – भारतीय कला, इलाहाबाद पब्लिकेशन 2002
10. गुप्त, जगदीश – भारतीय चित्रकला के पदचिन्ह, दिल्ली पब्लिकेशन 1961
11. गोस्वामी, प्रेमधन्द– आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ, रा. हि.ग्र.अ. जयपुर 1995